

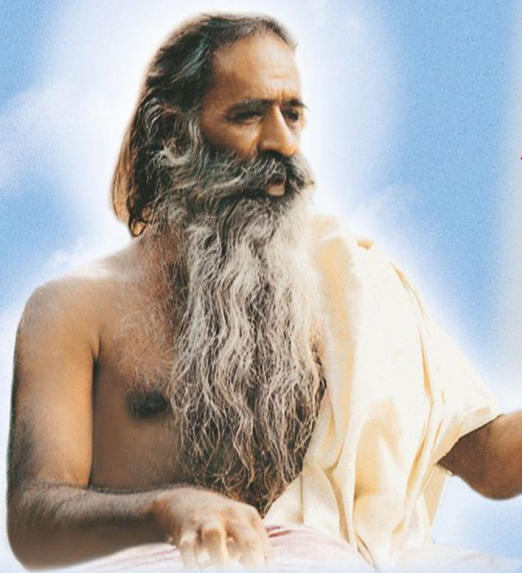
人間のための宗教学  
|| シュリマド・バガヴァット・ギータ ||

|| シュリマド・バガヴァット・ギータ ||

# ヤタルタ・ギータ

神の詩「バガヴァット・ギータ」の真意

5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200  
5200



年前から伝え  
られてきた神の  
詩の真意を完全  
に解明



ヤタルタ・ギータ

神の詩「バガヴァット・ギータ」の真意

スロミ・シュリー・アドガダベダ

JAPANESE



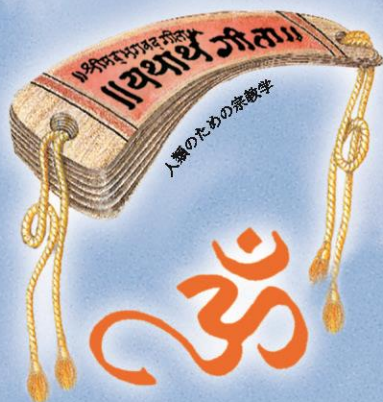
## 著者紹介

本書「ヤタルタ・ギータ」の著者は、いわゆる学校教育を受けた経験はなく、開悟者であるグルのもとで、長年にわたって瞑想の修行を積み、聖なる知識を体得しました。そうした体験のもとから、至高の境地を知るうえで著述行為は不用であり、余計であると思われていました。しかしながら、それでも本書は著者の指示に忠実なものとなっています。

ヤタルタ・ギータの執筆を除いて、精神的な課題のすべてを成し遂げた著者は、最高の実在を認識したうえで、さらに瞑想行為を深めていき、最終的には至高の存在のシグナルを堅実に受け止めたのです。また、執筆中に間違った方向になりそうであったならば、至高の存在が必ず正してくれました。スワミ・ジ先生のモットーである「内なる平静」が「万人の平和」につながることを希望しつつ、本書が人々の手に届くことを祈ります。

520 出版社

年前から伝え  
られてきた神の  
詩の真意を完全  
に解明



人類のための宗教学

|| シュリマド・バガヴァット・ギータ ||

# ヤタルタ・ギータ

神の詩「バガヴァット・ギータ」の真意

パラムブージャ・シュリー・パラムハンスジ・  
マハーラージャの恩寵の下、パラムハンス・  
スワミ・アドガダナンダ編集・解釈

Shri Paramhans Ashram  
Shakteshgarh, Chunar – Rajgarh Road,  
Mirzapur (U.P.) India – 231304  
Tel. : (05443) 238040

*Publisher:*

**Shri Paramhans Swami Adgadanand Ji Ashram Trust**  
5, New Apollo Estate, Mogra Lane, Opp. Nagardas Road  
Andheri (East), Mumbai – 400069 India





ギータの教えを説いている時、クリシュナの心境はどんな感じだったのであろうか。言葉や身振り・手振りだけで、心の奥にある感情やその動きを完全に伝えることは無理な要求ともいえる。それゆえにギータが教示する内容も例外ではなく、修行を重ねた求道者にしか理解できない部分が少なくない。ギータの真意は、クリシュナの境地に成就した指導者のみが理解するところである。悟りの境地に達した指導者もしくはグルは、ギータの句を詠唱するにとどまらず、そこに秘められた知識を正しく表現できる能力が備わっており、教示するときのクリシュナの心境も、そっくりそのまま思い描くことができる。そういうわけで、ギータの真意を我々に伝えることが可能とえている。また、それは悟りへの道を歩むときの支えになりうる。

敬愛する恩師パラムプー ज्या・シュリー・パラムハンスジ・マハーラージャはまさに究極のレベルに達した指導者であった。本書ヤタルタ・ギータは、ギータの真意を解明する助けとして、その恩師の講話や趣旨を編集して纏めたものである。

シュリー・スワミ・アドガダーナンダジ・マハーラージャ

## 当社の出版物

### 図書

ヤタルタ・ギータ \* インドの言語

### 言語

ヒンディー語、マラーティー語、パンジャブ語、グジャラート語、ウルドゥー語、サンスクリット語、ウヂヤ語、パンガラ語、タミール語、テング語、マラヤラム語、カンナダ語、アサミス語、シンヂ語

### \*外国語

英語、ドイツ語、フランス語、ネパール語、スペイン語、ノルウェー語、中国語、オランダ語、イタリア語、ロシア語、ファラシ語、ポルトガル語

SHANKA SAMADHAN シャンカ サマダナン

ヒンディー語、グジャラート語、マラーティー語、英語、ネパール語

JIVANADARSH EVAM AND

ATMANNBHOOTI ジヴァナダラシャ

ヒンディー語、グジャラート語、マラーティー語、英語

エヴァン と アタマナブウウチ

WHY DO OUR LIMBS VIBRATE AND WHAT DO THEY SAY?

ヒンディー語、グジャラート語、ドイツ語、英語

なぜと何我々の肢の振動を行う?

ANCHHUYE PRASHIN アンチュウイェ

ヒンディー語、グジャラート語、マラーティー語

バラシャナ

EKLAVYA KA ANGUTHA エカラビヤ カ

ヒンディー語、グジャラート語、マラーティー語

アングタ

BHAJAN KISAKA KAREIN? バジャン キスカ

ヒンディー語、グジャラート語、マラーティー語、ドイツ語、ネパール語、ベンガル語、英語

カレイン

YOG SHASTRIY PRANAYAM ヨガ

ヒンディー語、グジャラート語、マラーティー語

シャスチリヤ バラナヤマ

SHODOPCHAR POOJAN

ヒンディー語、グジャラート語、マラーティー語

PADHATI ショドパチャラ ボオジャン

パダッチ

YOG darshan ヨガ ダシャン

ヒンディー語、グジャラート語、サンスクリット語

GLORIES OF YOGA ヨガの栄光

英語

オーディオカセット

YATHARTH GEETA ヤタルタ・ギータ

ヒンディー語、グジャラート語、マラーティー語、英語

AMRIT VANIA ムリットバニ

ヒンディー語

(スワミジ の 言説 (1-55) )

オーディオCD (MP3)

ヤタルタ・ギータ

ヒンディー語、グジャラート語、マラーティー語、英語、ドイツ語、ベンガル語

AMRIT VANIA ムリットバニ

ヒンディー語

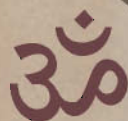
著作権©著者

すべての権利は留保されます。この本のいかなる部分を再現することができる検索システムに保存されます。これは、何らかの形で送信されることはできませんかの例電子、機械、コピー、記録するためのあらゆる手段や簡単な通路のレビューまたは重要な資料に引用を除いて出版社の書面による許可なし等による。



最も崇敬なるヨーギンとして、  
神の恩恵を受け、永遠不滅のわが師  
シュリー・スワミ・パラマナンダジ氏  
を記念して、本書「ヤタルタ・ギータ」を世  
界の人々に捧げます。

インド、チトラクタ、アンスイヤ寺  
院にてシュリー・パラムハンス



# GURU VANDANA

(SALUTATIONS TO THE GURU)

॥ Om Shree Sadguru Dev Bhagwan Ki Jai ॥

Jai Sadgurudevam, Paramaanandam,  
Amar shariram avikari ।  
Nigurna nirmulam, dhaari sthulam,  
Kaatan shulam bhavbhaari ॥

Surat nij soham, kalimal khoham,  
Janman mohan chhavidhaari ।  
Amraapur vaasi, sab sukh raashi,  
Sadaa ekraasi nirvikaari ॥

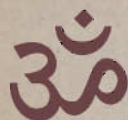
Anubhav gambhira, mati ke dhira,  
Alakh fakira avtaari ।  
Yogi advaishta, trikaal drashta,  
Keval pad anandkaari ॥

Chitrakutahi aayo, advait lakhaayo,  
Anusuia asan maari ।  
Sri paramhans svami, antaryaami,  
Hain badnaami sansaari ॥

Hansan hitkaari, jad pagudhaari,  
Garva prahaari upkaari ।  
Sat-panth chalaayo, bharam mitaayo,  
Rup lakhaayo kartaari ॥

Yeh shishya hai tero, karat nihoro,  
Mo par hero prandhaari ।  
Jai Sadguru ..... bhari ॥

॥ ॐ ॥



“आत्मने मोक्षार्थं जगत् हिताय च”



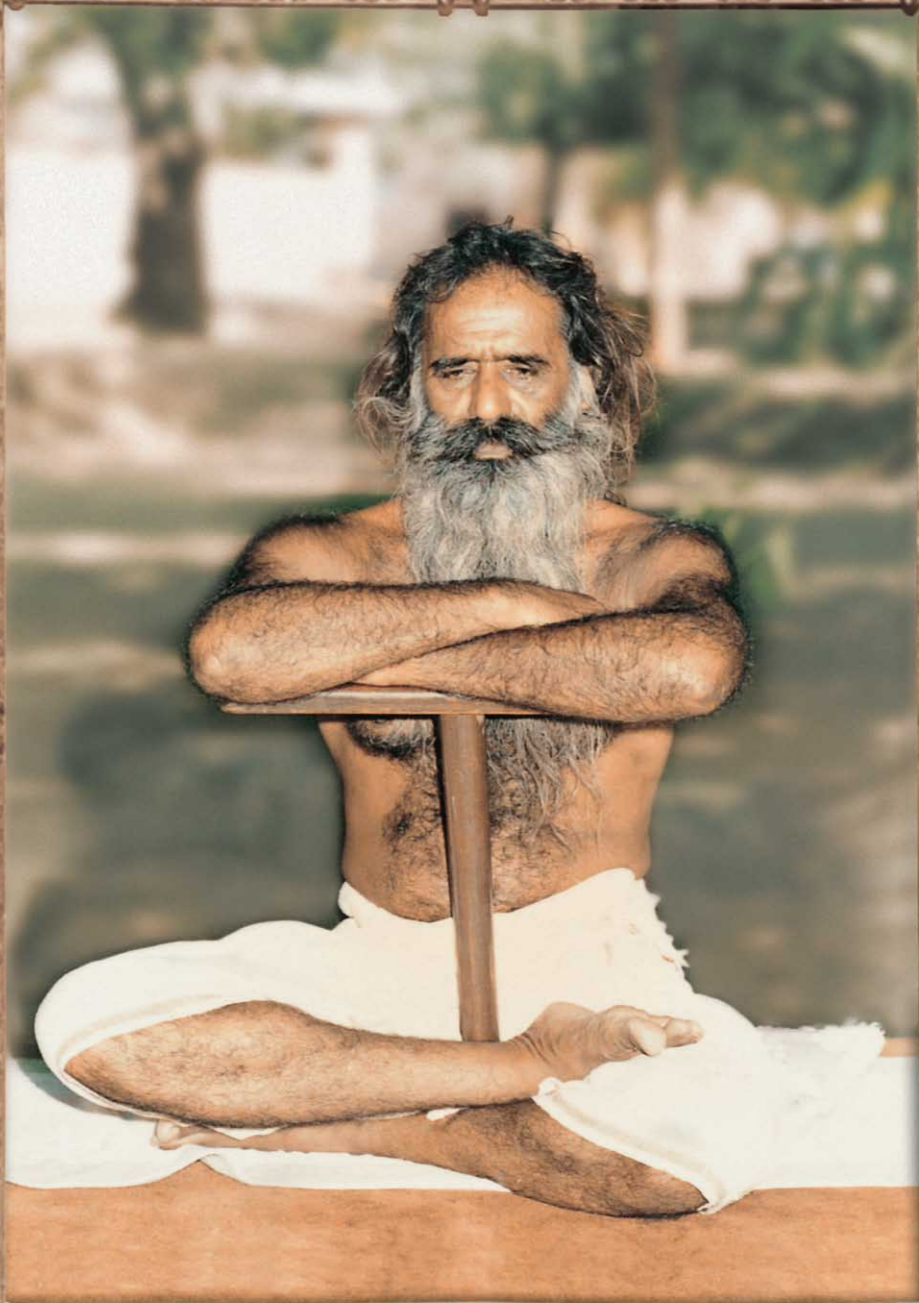
シュリー・スワミ・パラマナンダ・ジ マハーラジャ (パラマハンス・ジ)

出生年：ビクラム・サマヴァタ暦1969年（西暦1911年）

大悟（マハーサマーディ）：ビクラム・サマヴァタ暦2026年（西暦1911年5月23日）

パラマハンス寺院、アンスイヤ（チトラクタ）





シュリー・スワミ・アドガダーナンダジ・マハーラジャ  
(マハーラジャ パラマハンス・ジ の恵みによるもの)



**WRI WORLD RELIGIOUS PARLIAMENT**

(विश्व धर्म संसद)

C-121, KIRTI NAGAR, NEW DELHI - 110 015 (INDIA).

## विश्वगौरव सम्मानपत्र

वेदवेदांग आयुर्वेद ज्योतिषादि शास्त्रपरम्परासुरक्षाब्रती, अखिल संस्कृतवाङ्मयसंरक्षण—प्रचार—  
प्रसारपक्षधर आर्षसनातनमर्यादाजीवनपद्धतिसदाचारपरायण, “सर्वभूतहिते रतः—बसुधैव कुटुम्बकम्”  
के सद्भावना पर्यावरण से ओतप्रोत,

सम्माननीय श्री स्वामी अङ्गदानन्दजी महाराज - परमहंस उग्रश्रम  
निवासी श्रक्तेशगढ़ चुनार (मीरपुर) को

अन्तर्राष्ट्रीय अधिवेशन में विश्वगौरव सम्मानपत्र से विभूषित किया जाता है।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशाद्यजन्मनः ।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेत् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।

*World Religious Parliament is pleased to confer*

*The Title of Vishvagaurav*

*In recognition of his meritorious contribution for World Development*

*through श्रीमद्भगवद्गीता, च्यवनशतक, (भाष्यमहापरिगीता)*

*दिनांक, दुमरभेल 10-4-98 हरिद्वार*

*Chairman* (जगद्गुरु)

*Presentation Committee*

*Acharya Prabhakar Mishra*

*Chairman*  
*World Religious Parliament*

前世紀の最後のマーハ・クンブ礼拝(1998年4月10日)の折に、  
スワミ・シュリー・アドガダンダはヤタルタ・ギータ(全世界  
のための神の詩・バガヴァッドギータの忠実な解説)を祝して  
「インド最高の荣誉」というタイトルを与えられた。





“शरीरमाधं खलु धर्मसाधनम्” के मौलिक सिद्धान्तों पर आधारित विश्व में निरोगसमाज की स्थापना तथा शारीरिक मानसिक बौद्धिक सामाजिक स्वास्थ्य की उपलब्धि के लिए प्रयत्नशील एवं बाह्य तथा आन्तरिक पर्यावरण की स्वच्छता के लिए संकल्पित विश्व धर्मसंसद् प्राच्यअर्वाच्य ज्ञान विज्ञान की किसी भी शाखा के माध्यम से मानवता की सेवाओं में समर्पित व्यक्तियों को सम्मान करने में गौरव समझती है।

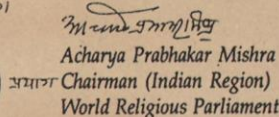
इसी धारणा-अवधारणा के दृष्टिकोण से उल्लेखनीय ज्ञान तथा सेवाओं के लिए श्री विश्वमानव को एक धर्मशास्त्र दाता विश्वगुरु स्वामी अङ्गद्वानन्द जी को —यथार्थ वीणा धार्मिक— क्षेत्र/विषय में —विश्वगुरु— सम्माननीय उपाधि से सम्मानित तथा जनसेवा के क्षेत्र में अग्रणी प्रमाणित करती है।

असिद् भगवद् गीता भाष्य "यथार्थ गीता" धर्मशास्त्र है।

World Religious Parliament is pleased to confer the above Title  
in recognition of his meritorious contribuiton for World  
Development through\_\_\_\_\_

*Presiding Authority*

महाकुम्भ  
मेला



バガワッドギータの解説書ヤタルタ・ギータのために、著者スワミ・シュリー・アドガダンドは、2001年1月26日インド・イラーハーバードで開催されたマーハ・クンプ礼拝の折に世界宗教連合会（ヴィシュワ・ダルマ・サンサダ）によってヴィシュワグル(世界の人および使者)というタイトルを享受した。また、国民の幸福に大いなる貢献をしたので、「社会の先導者」とよばれた。

॥ श्री काशीविश्वनाथो विजयते ॥

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-शास्त्रार्थविद्यावतार-विश्वदिश्रुत-महामहोपाध्यायदिविरुद्धविभूषक  
पण्डितसम्राट्-प्रातःस्मरणीय श्री शिवकुमारशास्त्रिमिश्रप्रतिष्ठापिता  
वाराणसीयसर्वविधविद्वत्समाज-प्रतिनिधिभूता-

**श्री काशीविद्वत्परिषद्**

पत्राचार कार्यालय  
डी. १७/५८, दशाम्भेध,  
वाराणसी, उत्तर प्रदेश  
मो. नं. ९४१५ २८५८५६  
टे. नं. ०५४२-२४५२११३

दिनांक १.३.०४

श्री काशीविद्वत्परिषद् समय-समय पर धर्म की समीक्षा करती आयी है। धर्म के सम्बन्ध में यह समाज को निर्देश देने का अधिकार रखती है। धार्मिक प्रकरणों में यह भारत की बहुमान्य सर्वोच्च संस्था है। किसी निर्णय को संशोधित करने का अधिकार परिषद् की कार्यकारिणी को है किन्तु धर्म और धर्मशास्त्र अपरिवर्तनशील होने से आदिकाल से धर्मशास्त्र श्रीमद्भगवद्गीता ही रही है।

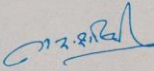
इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।

विवस्वानन्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ गीता, ४/१

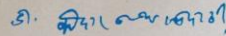
अर्जुन ! इस अविनाशी योग को कल्प के आदि में मैंने सर्वप्रथम सूर्य के प्रति कहा। सूर्य ने अपने पुत्र मनु से कहा। मनु ने इस स्मृत ज्ञान को सुरक्षित रखने के लिए स्मृति की परम्परा चलायी और अपने पुत्र इक्ष्वाकु से कहा। कालान्तर में इस स्मृति ज्ञान को महर्षि वेदव्यास ने लिपिबद्ध किया। मानव जीवन का नियमन तथा निःश्रेयस प्रदान करने वाली आदि मनुस्मृति गीता ही है।

मनु के समक्ष अवतरित वेद इसी का विस्तार हैं। अन्य शास्त्र समयानुसार विश्व की विविध भाषाओं में ईश्वरीय गायन श्रीमद्भगवद्गीता की ही प्रतिध्वनि हैं। गीता की अवधारणा को स्वामी अङ्गदानन्द जी ने 'यथार्थ गीता' में व्यक्त किया है जो शत-प्रतिशत सत्य है। परा विद्या की परिभाषा है।

स्वामी जी ने गीता की यह व्याख्या देकर विश्व मानव को एक धर्मशास्त्र, एक परमात्मा के पथ को प्रशस्त किया है। धर्मशास्त्र की व्याख्या के रूप में हम सभी 'यथार्थ गीता' की अनुशंसा करते हैं।



गणेशदत्त शास्त्री  
मंत्री  
श्री काशीविद्वत्परिषद्  
भारत



आचार्य केंदारनाथ त्रिपाठी दर्शनरत्नम वाचस्पति  
अध्यक्ष  
श्री काशीविद्वत्परिषद्  
भारत

スワミ・シュリー・アドガダンドは前世紀としてハリドワラで開催された最後のマーハ・クンブ礼拝の折に「世界的な栄誉」というタイトルを与えられた。その式典には四十四カ国からのシャンケラチャリヤ、マーハマンダレーシュワラ、ブラフマン・マーハサバ、その他の宗教家が臨在していた。



॥ श्री काशीविद्वत्परिषद् ॥

३०

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-शास्त्रार्थविद्यावतार-विश्वविभूत-महामहोपाध्यायविरुद्विभूषक  
पण्डितसम्राट्-प्रातःस्मरणीय श्री शिवकुमारशास्त्रिमिश्रप्रतिष्ठापिता  
वाराणसीयसर्वविधविद्वत्समाज-प्रतिनिधिभूता-

## श्री काशीविद्वत्परिषद्

पत्राचार कार्यालय  
डी. १७/५८, दशाश्वमेध,  
वाराणसी, उत्तर प्रदेश  
मो. नं. ९४१५ २८५८५६  
टे. नं. ०५४२-२४५२११३

दिनांक १.३.०४

श्री परमहंस आश्रम, शक्तेश गढ़चुनार की अपनी सौभाग्यपूर्ण यात्रा का सुअवसर प्राप्त हुआ है। वहाँ के वर्तमान परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानन्दजी महाराज के दर्शन का स्मरणीय अवसर काशी की विद्वन्मण्डली के साथ मुझे प्राप्त हुआ। श्री परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्दजी महाराज बहालीन योगिराज स्वामी श्री परमानन्द परमहंस जी के शिष्य हैं और उनके द्वारा प्राप्त मानव धर्मोपदेश को स्वरचित 'यथार्थ गीता' के माध्यम से मानव मात्र के लिये प्रसारित कर रहे हैं, जिस गीता का ज्ञान भगवान कृष्ण ने अपने मुखारविन्द से अर्जुन के माध्यम से समस्त मानव के लिये किया था। इसीलिये श्रीमद्भगवद् गीता मानव मात्र का धर्मशास्त्र है। भगवान एक हैं और सबके हैं अतः उनकी गीता भी एक आकाश, एक सूर्य और एक चन्द्र के समान सबके लिये है।

इस प्रकार गीता एकतामूलक है और स्वयं भी एकता का मूल है। भगवान ने स्वयं कहा है - ममैवांशो जीव लोकः" अर्थात् प्राणी मात्र भगवान का ही अंश है तथा अंश अशी में भेद नहीं होता है। अतः प्रत्येक प्राणी भगवद्भिरता के आधार पर वस्तुगत्या परस्पर में भी अभिन्न ही हैं। "तदभिन्नाभिन्नस्य तदभिन्नत्वं नियमः" यह वस्तुस्थिति है। अतः गीता एकतामूलक तथा एकता का मूल दोनों ही हैं। यही गीता की यथार्थता है जिसे पूज्य परमहंस जी महाराज ने "यथार्थ गीता" में, जो भाष्यरूप है, प्रतिपादित किया है।

यहाँ "यथार्थ गीता" पद से यह ध्रुम नहीं होना चाहिए कि कोई अयथार्थ गीता भी है क्योंकि गीता एक है - श्रीमद्भगवद् गीता। प्रस्तुत 'यथार्थ गीता' श्रीमद्भगवद् गीता का ही भाष्य है, जिसे स्वयं परमहंस श्री स्वामी जी महाराज ने प्रत्येक अध्याय की अंतिम पुष्पिका में कहा है। - 'यथार्थ गीता' भाष्ये - ऐसा उल्लेख करते हुये। इसलिये 'यथार्थ गीता' का अभिप्रेतार्थ है। गीता की यथार्थता! इस अभिप्रेतार्थ को श्री स्वामी परमहंस जी ने इस सम्पूर्ण भाष्य में प्रतिपादित किया है।

श्रीमद्भगवद् गीता पर अनेक भाष्य निर्मित हुए हैं - जैसे कर्म की प्रधानता बताते हुए लोकमान्य तिलक का गीता रहस्य, भगवद्भक्ति प्रधान वैष्णव भाष्य तथा ज्ञान प्रधान शांकरभाष्यादि ग्रन्थ! किन्तु प्रस्तुत यथार्थ गीता में एकेश्वरवाद मुख्यतया प्रतिपादित है जिसका किसी से विरोध नहीं है, प्रत्युत सबके साथ एक ईश्वरत्व की अनुभूति के रूप में सामंजस्य प्रकाशक है। क्योंकि कर्मकलाप भी उसी में पर्यवसित, भक्ति भी उसी की, तथा उसी का साक्षात्कार परमपुरुषार्थ मोक्ष का साधक है। भगवान ने स्वयं कहा है-

“यत्करोषि यदृश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।

यत्तपस्यसि कौन्तेय! तत्कुरुस्व मदर्पणम् ॥

“मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।

निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्व न संशयः ॥

तथा “ज्ञात्वा मां शान्तिं मुच्छति, “ज्ञान लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधि गच्छति “सर्व ज्ञानफलवेनैव वृजिनं सन्तिरस्यसि” तथा सर्व कर्माखिलं पार्थ! ज्ञाने परिसमाप्यते” इत्यादि। इस प्रकार प्रस्तुत 'यथार्थ गीता' की यथार्थता है - एक परमतत्त्व परमात्मा के आधार पर सबमें समत्व की अनुभूति -

“समो ऽहं सर्वभूतेषु न मं द्वेष्यो ऽस्मि न प्रियः ।

इस पवित्र उद्देश के साथ श्री परमहंस स्वामी अड़गड़ानन्दजी महाराज द्वारा संस्थापित एवं संचालित यह परमहंस आश्रम ऋषियों के प्राचीन गुफाओं एवं अरण्यों की तरह इस पर्वत श्रेणी के बीच से लोक में गीतोक्त इस उपदेश को उद्बुद्ध करने वाला है कि शास्त्रानुमोदित स्वाभाविक व्यवहार को अपनाते हुए सबमें “अभेदभावनयैव यतितव्यम् भाव को लोक कल्याणार्थ प्रसारित करना है।

हरि ॐ तत्सत्

डी. काशीविद्वत्परिषद्

आचार्य केदारनाथ त्रिपाठी दर्शनरत्नम वाचस्पति

अध्यक्ष  
श्री काशीविद्वत्परिषद्  
भारत

स्वामि・シュリー・アドガダндаは前世紀としてハリドワラで開催された最後のマーハ・クンブ礼拝の折に「世界的な栄誉」というタイトルを与えられた。その式典には四十四カ国からのシャンケラチャリヤ、マーハマンダレーシュワラ、ブラフマン・マーハサバ、その他の宗教家が臨在していた。

# ギータは全人類のための聖典

---

## ヴェーダヴィヤーサとクリシュナの時代

もともとインドでは、聖なる知恵や知識は口承的なあり方であり、文字として表された宗教の聖典は存在しなかった。しかし、ヴェーダヴィヤーサ大師が現れてから、精神界や物界に関する伝統的な知識は4部のヴェーダ、ブラフマスートラ、マハーバーラタ、バガヴァット・ギータなどに編集され、ヴェーダヴィヤーサ大師は「クリシュナが、人の悲しみや苦痛が自力で克服できるように、ウパニシャッド文学の精髓をギータに纏めたのである」と教示されるようになった。クリシュナがこの世に送ったバガヴァット・ギータとは「神の詩」であり、ヴェーダの原理、ウパニシャッドの精髓といっても過言ではない。これは精神的な支えとなって、最高存在を知覚するための方法を解き明かし、心の平安をもたらすという究極の処世術を説くものである。また、ヴェーダヴィヤーサ大師は自作において、ギータを聖なる知恵の宝庫と位置づけ、かつ活動的な人生を送るためのダイナミックな思想として考えるべきだと強調した。ギータがクリシュナ自身による知恵の蓄積であるゆえ、その他の聖典の教えに従う必要はあるまい。

次の一節には、ギータの精髓が解明されている。

एकं शास्त्रं देवकीपुत्र गीतम्, एको देवो देवकीपुत्र एव ।

एको मंत्रस्तस्य नामानि यानि, कर्माप्येको तस्य देवस्य सेवा ॥



この一節によれば、聖典は唯一である。それはデーヴァキの息子として主クリシュナが語られ、学ぶべき精神的な存在は唯一つということである。ここで解説されている真実とは、他でもない「魂」のことをあらわす。靈魂不滅というように魂のみが永遠に存する。ギータにおいて聖人はオームと詠唱するように勧説する。「アルジュナよ、オームとは永遠不滅の精神的な存在の名である。オームを詠唱し、我を思い瞑想をするべし。ダルマ、つまり定められた行為もまた唯一つであり、それはギータにて説明されたる最高精神に仕えることである。聖音オームを崇め、それを心に住するように唱えよ。そうすれば、ギータはあなた自身の聖典となる。」

原始時代から聖者は創造主の神を遍在する真実として説いてきたが、クリシュナはこれらの聖者の使者でもある。しかし、解説書「ヤタルタ・ギータ」が明らかにしているように、クリシュナは彼らの知識を踏まえながら、最高存在を知って成就する道を教示し、その道でどこまで進歩したかを確認する方法についてギータによって具体的に言及していく。ギータは心の平安を与え、また苦しみを永遠に克服していく上で、大いなる助けにもなる。「ヤタルタ・ギータ」を参照すれば、いつか必ず最高精神の真意を見極めるに違いない。

ギータの普遍性が一般的に認められているものの、インドではギータの教えとあわせて独自の教理を変えたり、組み入れたりした宗教あるいは宗派は見当たらない。宗派はそもそも自分の教理に絞られているからである。ギータは、精神的な価値を大切にする国とされるインドで生まれたゆえ、ギータをインド文学とする見方があっても不思議ではない。しかし、階級差別やさまざまな戦争といった負の遺産を克服し、今や人類全体に平安をもたらすよう努力していく時代が到来しているのではないか。ギータは遍在する知識の遺産でもあるので、こうした意味でも意義のある聖典ということができる。

# 不変のダルマの原理

## 1. 人はみな、神の子ども

『身体に存する不滅の精魂は私の心の一部であり、ブラクリティに住する五感と第六の意識を引き寄せる。』

15/7

人間は神の子どもである。

## 2. 人間の目的

『まして福德あるバラモンたちや、王仙である信者たちは救済される。このように無常で哀れな身体を捨て、ひたすら私の説く崇拝に専心せよ。』

9/33

『金銭や快適な環境がないとしても、めったに到達することはないゆえ、私を崇拝せよ。こうした崇拝をする権利はだれしも認められている。』

## 3. 人間にはただ¥2種類あり

『バルタよ、この世界に存在するものとしては二種がある。すなわち、神聖なものと邪悪なものである。すでに神聖なものについて詳しく説いた。さて、これから邪悪なものに関して述べることにする。』

16/6

人間はふたつの種類に分けられる。すなわち、敬虔さを備えた神聖な人と、猜疑心のある邪悪な人である。自然界における人間は、このように分別されるしかない。

## 4. 神はすべての希望を満たしてくれる

『三ヴェーダにある敬けんな行為をなし、甘露（聖なるネクター）を飲み、罪悪が浄められ、ヤジュニヤにより私を崇拝し、天界へ行くことを求める人々は、天界（インドラローカ）において、徳行の報いとして神聖な享楽を味わう。』

9/20

私を崇拝すれば、人々は天界に達しようと切願して解脱する。至高の存在という神の恩恵により、すべてが安楽に到達できる。



## 5. 最高存在に帰依をすれば、罪から解放される

『たとえ極悪人であろうとも、知識の舟が邪悪の島からあなたを連れ去り浄化するだろう。』

智恵を授かれれば、この上ない罪惡を犯した者も確かに至高の境地に達することが可能である。

4/36

## 6. 知識について

『究極の真実である最高精神を認識すること、つまりアディヤートマと呼ばれる認識をもって堅固に専念することが知識であり、それと反対のことはすべて無智である。』

至高の精魂としての智恵を尊び、最高精神という永遠の真実を直覚すること、それは神聖なる知識の要素を構成する。こうした知識のほかは、すべて無智である。すなわち、神を直覚することは智恵なのである。

13/11

## 7. 人間は誰でも崇拜する権利あり

『たとえ極悪人であっても、ひたすら私を信愛するならば、彼は善人であるとみなされるにふさわしい。彼は正しく決意した人であるから。速やかに彼は敬けんな人となり、永遠の平静に達する。クンティーの息子よ、私の信奉者は滅びることがないことを確信せよ。』

「ひたすら私を崇拜するならば、どんな極悪人でも必ず清浄な精魂に住することとなり、永遠の至福を知る。」  
このように、清浄な精魂は至高の存在に帰依した人そのものである。

9/30-31

## 8. 一度まいた崇拜の種は永遠に

『ここにおいては、企てたことが消滅することなく、退転することもない。この〔ヨーガの〕教法（ダルマ）のごくわずかでも、大なる恐怖（輪廻）から人を救済する。』

永遠の真実に向かって行為するとき、わずかな進歩であっても、求道者は生死という束縛から解放される道に向かっているのである。

## 9. 最高存在は心に住する

『アルジュナよ、マーヤー（幻力）により、万物を行為に駆り立てながら、神は万物の心に住する。（18/61-62）』

『バーラタよ、誠心誠意で神に庇護を求めよ。天の恵みによって心の平安と永遠の至福を知ることになるだろう。』

2/40

神は人間の精神に住する。ゆえに無執着の境地で至高の存在に専心しなければならない。神の恩恵によって、人は究極の幸福を知らう。

## 10. ヤジュニャについて

『他のヨーガ行者は知識が火をつけた、自制というヨーガの炎に感覚機能や呼吸機能を焼べる。（4/27）』

『吸気のために呼吸をささげる人々もいれば、呼気のために吸気をささげる人々もいる。また、調息法に専念して安定した呼吸を行なう人々もいる。』

18/61-62

ヨーガの炎と神の知識で輝く精魂は、感官の作用や感情の起伏によって埃をかぶってしまう。無心の境地における瞑想によって、生氣はアパーナに、アパーナはプラーナに捧げられる。さらに進んだ段階でのヨーギンは、すべての活力を制御して、調息法（プラーナーヤマ）の行為に専心する。こうした実践方法はヤジュニャとよばれる。こうした行為を遂行すること、それはカルマであり、「定められた行為」をさす。

## 11. ヤジュニャを行なう者

4/27, 29

『ヤジュニャから流れる甘露を口にしたヨーガ行者は最高のクルであり、永遠の最高神と対面する。ヤジュニャを行なわずに、現世で悲惨に生きている人々が来世でどのように幸福をつかむというのか。』

ヤジュニャという行為を実践しない人々は、人間として転生することが非常に困難となる。ゆえに人はみな、崇拜という瞑想（ヤジュニャ）を実践する権利が与えられている。

## 12. 神を直覚できる

『アルジュナよ、ひたむきで清らかな崇拜者はこのような私を直に知り、その本質を掴み、深い信愛のもとで私と融



合する。』

深い帰依心をもっているならば、神を直感して理解し、さらに神に住することは難しいことではない。 4/31

『ある人は稀有に精魂を見る。他の者は稀有に精魂のことを語る。また他の者は稀有に精魂について聞く。聞いても、誰も精魂のことを知らない。(2/29)』

悟りを得た聖者はこうした精魂のある奇跡として把握できる。これが直覚と呼ばれる。

### 13. 精魂は永遠不滅であり真実である 11/54

『彼は絶たれず、焼かれず、濡られず、乾かされない。彼は常住であり、遍在し、堅固であり、不動であり、永遠である。』

精魂のみが真実であり、永遠不滅である。

### 14. 創造神も創造物も可滅的な存在 2/29

『アルジュナよ、ブラフマーの世界（ブラフマーローカ）に至るまで、全世界は回帰するものとなっている。しかし、クンティの息子よ、私に達する精魂は再生されることがない。』

ブラフマ（創造神）および万物は悲哀に満ち、可滅的なものである。 2/24

### 15. 神々の崇拜

『根本原質の影響により知識を失い、世俗の享樂を求める人々は、はびこる習慣を真似て、唯一の神ではなく他の神々を崇拜する。』

自然界の享樂や快適さを味わい、智恵をなくした人々は愚者であり、至高の存在ではない別の神々を崇拜する。 8/16

『別の神々を崇めつつ、懸命に私に帰依する人々は、定められた約束を守らないゆえ、無智のバールで覆われている。』

別の神々を崇拜する人々は、無智という闇に包まれながら至高の存在を崇拜するゆえ、どんな努力も無駄となる。

『聖典が定めていない過酷な苦行をなし、渴望、執着、権力による虚栄、さらに偽善や尊大に悩む人々、また身体をなす元素群だけでなく精魂に宿る私をすり減らす人々は邪悪で無智な人々であることを心に留めよ。』 7/20

高潔な人々でさえ、別の神々を崇拝しがちであるが、そうした人々は邪悪な性質を帯びていることを知るべきである。

## 16. 卑劣な人々

ヤジュニヤの実践という定められた道を捨て、聖なる規定を無視する人々は残酷で罪深く、また卑劣である。

## 17. 定められた行為

『聖音オームを詠唱し、私を念じつつ身体を離れる人は救済の境地に達する。』 17/5-6

オームを詠唱すること、それは永遠のブラフマそのものである。ゆえに悟りを得た聖者の指導とは、無比である至高の存在を想起しながら、崇拝による瞑想をさす。

## 18. 聖典

『汚れなき者よ、あらゆる知識において最も深遠なものを説いた。バラータよ、なぜなら、真実を知れば、人は賢智ある者となり、あらゆる任務を達成する。』

## ギータは聖典である

『聖典とは、なすべきこととなすべきでないことを示す典拠であり、聖典が定める行為に従って、あなたは行為をなすべきである。』

8/13

まさに聖典とは、義務を遂行するか回避するかという決定の基本となる。それゆえ、ギータにある定められた行為に従って活動すべきである。

## 19. ダルマについて

『他の一切の義務（ダルマ）を捨て、ひたすら私に庇護を求めよ。そうすれば私はあなたの罪惡を一切取り払うだろう。嘆くことはない。』

15/20

心の動揺、つまり気分の浮き沈みが完全に消え去り、至福の境地に達するという定められた行為、（無比である至高の存在に専心すること、これが救済の道である）と解釈することがダルマ（2/40）とよばれる真の行為である。そして、たとえ極悪人であっても、善人であるとみなされるにふさわしい（9/30）。

16/24

## 20. 成就の場

『というのは、私は永遠の神の基底であり、不死で不滅のダルマの基底であり、究極の幸福の基底であるから。』

精魂はダルマという永遠不滅の神に住する。究極の目的に達することが至福である。換言すれば、神の恩恵を受けた聖者であり、悟りを得た導師は至福の化身である。

18/66

世界のあらゆる宗教の真髄をギータのひびきとみなすことができる。また、ギータはすべての宗教の源泉である)



## 太古の時代から現在まで、聖者の残した神のメッセージの数々

---

太古の時代から現在まで、聖者の残した神のメッセージの数々 著者 スワミ・シュリー・アドガダナンダ・ジ氏は1993年のガンガー川祭典中の幸運の日、自宅（シュリー・パラムハンス・ジャガタナンダ寺院、ウッタル・プラデーシュ州、ミルザープル県、カッチャヴァ市）の入り口に下記の聖典から引用した神のお言葉を記した看板を取り付けた。

- ヴェーダ時代の聖者（原始時代：ナーラーヤナ・スクタ）  
最高存在はあらゆる所に存在し、真実そのものである。涅槃に到るためにはそれを理解する道しかない。
- バグヴァン・シュリー・ラーマ（およそ数百万年前のトレータ時代：ラーマヤナ）  
祈りもせず、祝福を願うものは最高存在を知らず。
- ヨーグシュヴァラ・シュリー・クリシュナ（約5200年前、ギータ）  
唯一の神の他に真実はない。瞑想以外に神性に達する方法はなく、神々の偶像を奉るのは愚者の宗教としか言えない。
- モーセ（約三千年前、ユダヤ教）  
人が信仰から離れて偶像を奉ることが邪教で神が怒る。そこで神に祈り始めるべきである。
- ザラスシュトラ（約2700年前、ゾロアスター教）  
苦難の原因である「悪」を心から追い払うために、アフマズダ神を思い描いて瞑想せよ。
- マハヴィーラ・スワミ（約2600年前、ジャイナ教）  
精魂は真実である。それは現世において、厳しい修行によって知覚しうる。

- ガウタマー・ブッダ（約2500年前、釈迦／大般涅槃經）  
私はかつての聖者が成就した至高の境地に達した。これを涅槃という。
- イエス・キリスト（約2000年前、キリスト教）  
神性をもたらすには祈りの道しかない。私に帰依しなさい、そうすれば、あなたは「神の子」となる。
- ムハンマド（約1400年前、イスラム教）  
信仰告白「アラー以外に神はなく、ムハンマドは神の使徒なり」、この祈りを勝る、万物を貫く普遍的な神様への祈りはない。ムハンマドやその等輩はみな聖者である。
- アディ・シャンカラ・チャリヤ（約1200年前）  
俗世とは無益な塊でしかない。真実在は創造主の名のみである。
- カビール（およそ六百年前）  
ラーマの名は無双であり、他はすべて類似したものばかりである。唱名ラーマに万物のはじまりから終りまで一切を網羅している。ゆえに崇高なラーマの名を唱えるべきだ。
- グル・ナーナク（およそ五百年前）  
「エーク・オームカル・サートグル・プラサディ」つまりオームだけが真実の存在であるが、それはまさに聖者たちが愛顧するものである。
- スワミ・ダヤナンド・サラスワティー（およそ二百年前）  
祈りの対象とすべきものは永遠不滅の神であり、オームとはその主たる名をさす。
- スワミ・シュリー・パルマnder・ジ（紀元後1911~1969）  
永遠不滅の神の愛顧を得ると、敵は友人となり、不遇が幸運のはじまりとなる。神は普遍的な存在である。

# 見出しページ

纏リ纏、纏医N： 纏壹・纏ク逡エ蛇キ：

	まえがき .....	V-XX
第1章	当惑と哀絶のヨーガ .....	1-32
第2章	行為への関心 .....	33-88
第3章	難敵打破への勧告 .....	89-122
第4章	ヤジュニヤという行為の解明 .....	123-160
第5章	最高神であるヨーガの達人 .....	161-178
第6章	瞑想のヨーガ .....	179-204
第7章	完全な知識 .....	205-222
第8章	不滅の神に対するヨーガ .....	223-242
第9章	精神の開化への奮励 .....	243-266
第10章	神の壮大さ .....	267-288
第11章	遍在性の示現 .....	289-312
第12章	信愛のヨーガ .....	313-322
第13章	行為の領域とその智者 .....	323-336
第14章	三根本原質（プラクリティ）の区分 .....	337-348
第15章	至高の存在のヨーガ .....	349-362
第16章	美德と不徳を区別するヨーガ .....	363-374
第17章	三種の信義をあらわすヨーガ .....	375-390
第18章	放擲のヨーガ .....	391-427
	抄録 .....	428-453



## まえがき

---

ギーターの注釈書といえ、現存するサンスクリット語だけでも50を超え、他の諸言語によるものを合せると大変な数になる。それならば、ここで改めて注解する必要はないように思われるかもしれない。しかし、どんなに多くの解説書があろうとも、底本となるギーターは唯一無二なのである。ヨゲシュヴァーラ（聖者）としてのクリシュナの所説は、なぜ多くの異議や論争を生じさせるのかと疑問をもつ人もいるだろう。クリシュナが説く真実は確かにひとつであるが、例えば聞き手が10人であるなら、十人十色の解釈が生まれてしまう。そもそも、人間の根本原質がサットヴァ（純質・美德）、ラジャス（激質・不徳）、タマス（暗質・無知）という三要素から成り、人間の理解はどれかひとつが優勢となって決定される。つまり、我々人間は常にこの三要素の支配下にある。ここからして、「神の詩」であるギーターの真義をめぐって数多の議論が繰り広げられるのも決して不思議ではない。

ある特定の主題に関して多大なる見解がなされ、さらに同一の原理を言明するために種々の手段や表現法が用いられる。人々はこういった事実に関心されて疑問の穴にすくわれ落ちてしまう。中には、真実性を帯びた正統派のすぐれた注釈もありそうだが、ギーターの注釈書はおびただしく、そこから適切に選び出すことはほとんど不可能である。ときに虚偽は真実の衣を纏っているもので、それが本物かどうかを見極めることは非常に骨の折れる仕事である。というのも、大抵の注釈書には真実を追究しているかのごとく巧みな表現がみられるからである。また、これに対して、真実が何かを正しく理解した解釈者が過去に存在したにもかかわらず、何らかの事情があって上梓されなかったということもある。

ギーターの真義を理解しようとするとき、それを困難にさせる理由のひとつとして、まずクリシュナがヨーギン、つまり悟りを開いた聖者であったことが考えられる。クリシュナが、友であり弟子でもあるアルジュナに教えを説いたときの聖者（ヨゲシュヴァーラ）の真意は、クリシュナの教示によって徐々に最高精神に達する人、つまり知識と認識を以て最終目的となる絶対の境地に帰結した人だけが理解し啓示できる。精神の内側にあるものを完全に言葉で表現することは到底無理である。大体のことは顔の表情や身ぶり手ぶり、あるいは表現力をもつ沈黙などで伝達されうるが、その一方で表現しようのない動的な何かが伝達されずに残る。しかし、求道者たちは探し求めるという方法をとらずに、行為をなすことでその真意を知ることができる。すなわち、クリシュナが説いた最高の境地への道を歩み、最終的に達した聖者のみがギーターの本当の意味を掴める。クリシュナの理解と洞察は同時にこのような聖者の理解と洞察であるから、聖者というものは聖典にある台詞を再生するというよりもその真義なるものを知り説明することができる人であり、先覚者としてその真髄を啓示し、さらに他の修行者を悟りの道に目覚め、歩み出させるという能力を有する。

私が最も敬愛する恩師パラムハンス・パラマナーンダ・ジ・マハラージャ氏は前述の境地に達した聖者のひとりであった。ヤタルタ・ギーターは筆者自身によるものは一切なく、すべて我が恩師が言説した内容をひとつに纏めたものである。従って、本注釈書は読者が自分で何かを見つけ、読むうちに理解を深めていくためのものである。また、本書の役割は、精神的な探究および向上の道を選んだ人が必ず関わる動的な行為に方向づけられた原理を具体化することにある。しかし、読者がここから逸れ、崇拜と瞑想の道を歩む準備を躊躇している間は、俗的で固定観念に縛られた世界を迷妄している状態にあるといえよう。クリシュナが勧めていたことだが、我々は最高の境地を知る聖者に救いを求めるべきなのである。クリシュナは、自分の説く真実をすでに他の聖者たちが知り、賞美してきたことを自認している。また、この真実を認識したり示現したりすることができる者はクリシュナだけであるなどと断言したこともない。クリシュナが熱心に説いたことは、崇拜者は先覚者のところでオアシスを見つけ、純粋な気

持ちでその教えに従い知識を吸収することである。さらにクリシュナは悟りの境地に達した他の聖者たちが知見した真実についても触れているのである。

サンスクリット語で著わされたギーターは簡潔明瞭である。我々が統語や術語の語源について注意して熟読するならば、ほとんど自力で理解していくことは可能である。ところが、これらの言葉がしめす本当の意味を受け入れることは一般に好まれていない。一例を挙げれば、真なる行為とはヤジュニヤという行ないであるとクリシュナが明言している点である。そもそも我々はちょうど従事している世俗的な用件のすべてが行ないであるという考えに陥ってしまう。クリシュナは、ヤジュニヤの本質について解明しながら、『アパーナ（出息）のためにプラーナ（入息）を捧げるヨーギンもいれば、プラーナのためにアパーナを捧げるヨーギンもいる。さらに、完全なる寂靜の氣息（プラーナヤーマ）を遂げるためにプラーナとアパーナの両方とも統制するヨーギンもいる』と説く。多くの聖者たちは自制という神聖なるエネルギーのために感覚による嗜好を放棄する。このように、ヤジュニヤはプラーナとアパーナという氣息による瞑想をさす。しかし、それでも我々はスワハを詠唱し、穀物、種子、バターなどを祭壇の火に投与することがヤジュニヤであるという考えを改めようとはしない。このことはクリシュナ聖者が暗示した内容とは全く異なる。

ここでギーターの真義についての誤解がなぜ広がってしまったのか、その原因について言及したい。根気よく読解の虫となって励んでも、そこで得るものは形式的な外部構造でしかない。それならば、時代の変遷とともに失われてしまった真実の本質をわれわれはどう見つけ出すべきだろうか。人間は出生・成長過程において、一般に住居、店舗、土地、所有権、階級、名誉、家畜、現在では機械装置などを受け継ぐ。また同様に、習慣、伝統、崇拝法などが確かに受け継がれていくものである。具体的には、個性豊かな33億ものヒンズー教の神や女神、また世界中にある諸々の形式は有害な宗教的遺産である。子供は両親をはじめ、兄弟姉妹や隣人たちの崇拝法を観察して育つ。こうして子供の精神に家族の信仰、祭祀、儀式は永続して刻印される。その子に対する遺産が女神への崇拝であるとすれば、その女神の名を生涯かけて唱えることとなる。また、世襲財産として聖霊や靈魂への崇拝を受



け継ぐならば、永遠にそれらの名を呼び続けざるをえない。さらに、ある人はシヴァに、またある人はクリシュナに執着し、その他さまざまな神性なものにすがりつくわけである。この習慣を捨て去ることは並み大抵なことではない。

このように特定の信仰に繫縛された人がすばらしい聖典であるギーターを手にしても、それが表す真髄を把握することはできない。かりに受け継いだ物的遺産を放棄することに成功しても、伝統や信仰といったものから逸脱することはできない。所有物を捨離することができても、精神的領域に根付いた思想、信仰、慣習を撲滅することは無理である。従って、我々に継承された祭祀、慣習、崇拜法と照合してギーターで説かれる真実を説明する根拠はまさにここにある。ギーターという聖典の主旨がこれらの宗教的遺産のそれと調和し、一致しているというのであれば、その真実性を認めることに異論はない。また、我々は一方的にそれを拒絶し、便宜を図って無理やり適合させるつもりもない。しかし、ギーターにおける知識は神秘のベールに包まれていて、ほとんどの場合に解くことができないということは驚嘆すべきことか。この秘密は謎のまま残っていく。最高精神との類似点だけではなく真なる自己を悟った聖人や導師たちはギーターで教示される真実を知る者である。すなわち、このような先達者のみがギーターの真髄が何かを語り継ぐ資格を有する。しかしまた、その聖者のもとで修行する熱心な求道者もいつかになって秘密を解くことになる。クリシュナはこの認識の方法について何度も触れている。

ギーターは、個人・階級・団体・学派・宗派・国民あるいは時代のための神聖なる書物だけではなく、まさに全宇宙のため、あらゆる時代に適った聖典である。つまり、国家や人種を超え、性別、精神レベルや能力を問わず、全人類あてに著わされた貴重な書物といえる。だからといって、自分の存在に関係する決定は単なる風説や誰かの影響に基づいて行なうべきではない。クリシュナは最終章において神秘なる知識を聴聞するだけでも実に有益であると説く。しかし、求道者は、成就者である導師のもとで習得した後、その内容を自ら実践し、自分の行動や体験に取り入れていかなければならない。つまり、あらゆる偏見や先入観を一切捨て去り、ギーターの扉を開く必要がある。そして、我々はついに真なる光明を見い出すことになる。

単に聖なる書物としてギターを評価してしまうことは適切ではない。というのも、書物とは読者の知識収集に役立つ道標であるに過ぎないからである。ギターにおける真実を知る人は神の知識をあらわすヴェーダの知者といわれる。ブリハド・アーランヤカ、ヤージュニャヴァルキヤというウパニシャッドはヴェーダ文学を『永遠なる氣息』と呼んでいる。しかし、我々が常に記憶にとどめておくべきことは、ギターにおける知識や智慧はすべて、崇拜者の精神においてのみ知覚されるということである。

あるとき、高名な聖者ヴィシュヴァーミトラは瞑想にふけていた。この様子に喜んだブラフマー神（梵天、創造神）があらわれて『今日から汝は聖仙である』と告げた。しかし、このお告げに満足できないヴィシュヴァーミトラはさらに深く瞑想の境地に入った。しばらくして、ブラフマー神が他の神々を連れて再びあらわれ、『今日から汝は王仙である』と告げた。またしても満足することのできないヴィシュヴァーミトラは休むことなく瞑想を続けた。すると、神の宝庫とされる美德の推進力である神々と共にブラフマー神があらわれ、『今日から汝は大仙である』と告げた。それを聴いたヴィシュヴァーミトラは、最年長の神に向かって『われは感覚能力を自在に操る神仙と呼ばれたいのだ』と言った。それに対して、ブラフマー神はヴィシュヴァーミトラの主張はまだ認めることができないという意志を示したので、ヴィシュヴァーミトラはこれまでになく厳格な瞑想による修行を始め、頭から煙を出した。神々に懇願されたブラフマー神が、ヴィシュヴァーミトラの前にふたたび姿を見せて『そなたが神仙であることを認めよう』と告げた。それでヴィシュヴァーミトラは、『われが神仙であるならば、是非ヴェーダと結ばせてほしい』と請願した。この願いはかなえられ、ヴィシュヴァーミトラの心にヴェーダが芽生えた。未知とされた真髄、神秘的なヴェーダの知識と智慧がこのようにして知られるようになったのである。ヴェーダは書物にとどまらず、まさに真実を語る媒体ともいえる。かくして、ヴィシュヴァーミトラ神仙のいるところに必ずヴェーダあり、となったのである。

さて、クリシュナは世界がまるで不滅の聖樹であると解明している。聖樹の根は上方に伸びており、神をあらわす。その枝は下方に広がり、自然をあらわす。すなわち、この聖樹を放擲の斧で切り倒

し、神を知るものはヴェーダの知者である。本質の支配が停止されると表出される神への認識はヴェーダと呼ばれる。この直感力は神からの賜物であり、いわば自己超越といわれるものである。聖者とは最高精神と合一し、無私の境地に到達した開悟者であり、この開悟者の言葉は神の御言葉そのものといえる。つまり、神が送る信号が聖者に届き、それを通じて聖者はその媒体となる。聖者の伝えようとする真実を悟るためには、単なる言葉や文法構造の理解では不十分である。求道者は、精神統一を図るための実践により身体を脱し、自我と神との合一を成就したそのとき、隠れた意味を把握することができる。

たとえ間接的であるにしても、ヴェーダには百ないしはそれ以上の聖者たちの言説が編纂されている。しかし、彼らの言説をこれらの聖者とは別の人が書き留めることになれば、必ず社会規範や組織の法典も取り入れられる。このような法典はりっぱな聖人たちの手で作り上げられたのだという誤解があるため、ダルマによる真の人生の目的達成とは全く無関係な規定を一般に堅く守ろうとするきらいがみられる。現在においては小人物が自己の仕事を片付けたいがために、実際には大した間柄でもないのに、権力の行使者と親密であるかのように振る舞ったりする。また、同様に社会生活や品行に対する規則を法典にした人々が大聖者の陰で活動し、その尊称を営利上の食べ物にしたりする。ヴェーダに関してもこういった不正がなかったわけではないが、数千年前に生きていた聖者や先覚者たちが啓示したヴェーダの真髄は幸いにもウパニシャッドの中に秘蔵されている。それは、いわゆる教義や神学とは異質であって、日常生活においてただちに実践可能な宗教的経験に関するものであり、永遠の真実につながる見識を示している。ウパニシャッドは現実の本質を探究しながら、精魂の最高の境地に関する洞察を展開している。いってみればギーターはウパニシャッドが包含するヴェーダの真髄の要約であり、また、ヴェーダという天上の詩集からウパニシャッドが抽出した不朽の精髓なのである。

また、至高の境地に到達した聖者はすべて同様にこの精髓の化身である。世界のどこであろうとも、このような聖者の言葉が編纂され聖典として知られている。しかしながら、独断家や偏執なる信仰者たちはある特定の聖典のみが唯一真実を語るものであると主張する。